कलावसुधा

प्रदर्शनकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2348-3660

अप्रैल–जून, 2025

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

गति (Movement) प्रसंग

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 25 ■ अंक : 48 ■ अप्रैल–जून, 2025

ISSN-2348-3660

प्रकाशन स्थापना के 25 वर्ष

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा
3. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
4. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
5. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
6. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
7. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
8. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
9. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
10. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
2. प्रो. ऋचा नागर
3. डॉ. अरविन्द कुमार
4. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
5. भारत रत्न भार्गव
6. डॉ. गौतम चटर्जी
7. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
8. प्रो. डॉ. बलीराम धापसे
9. प्रो. डॉ. सुबाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
10. डॉ. अपूर्वा अवस्थी

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : https://www.kalavasudha.com

ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com

मो. : 8052557608	मो. : 9889835202	मो. : 8009800436
(प्रधान संपादक)	(संपादक)	(सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप **Not Nul (https://www.notnul.com)** पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका
■ वर्ष : 25 ■ अंक : 48 ■ अप्रैल–जून, 2025
ISSN-2348-3660
Peer Reviewed
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सिलसिला.....

गति प्रसंग

	कहना–सुनना		4
1.	ललित निबंध काल, कला और गति	–डॉ. राजेश कुमार व्यास	7
2.	कलाओं का सौन्दंर्य गति में निहित है!	–डॉ. श्यामसुन्दर दुबे	12
3.	सिनेमा में गति हम हैं राही प्यार के, हमसे कुछ न बोलिए	–शशांक दुबे	15
4.	नाट्यशास्त्र में 'गति' (Movement) की भूमिका	–प्रा. डॉ. चंद्रशेखर कणसे	19
5.	ताल (गति) की अवधारणा तथा संगीत में महत्व	–डॉ. सुभाष चन्द सिंह कुशवाहा	21
6.	''कथक नृत्य में गति–लय का महत्व''	–प्रो. डॉ. बी.डी. 'माणिक' महंत	27
7.	गति की व्यापकता अवर्णनीय	–डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'	29
8.	गति, स्थानक और चारी	–डॉ. गौतम चटर्जी	32
9.	नाट्य में स्वर–लय–गति के आयाम	–डॉ. अंजना पुरी	34
10.	''रायगढ़ घराने के नर्तन में गीत–लय दर्शन'	–डॉ. मानव महंत	37
11.	गति और रंगमंच	–दिनेश अग्रवाल	42
12.	प्राचीन भारतीय साहित्य में गति	–डॉ. पत्रिका जैन	45
13.	विभिन्न कलाओं नृत्य संगीत, नाटक में गति का महत्व	–डॉ. जयशंकर राय	47
14.	Movement (गति) के विभिन्न रूप और मानवीय चिन्तन	–डॉ. बीरेन्द्र कुमार चन्द्रसखी	55
15.	मेवाड़ शैली के हरिवंश पुराण के चित्रों में गति का अंकन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	–कुशाग्र जैन	57
16.	चलते चलते	–डॉ. अर्चना कुशवाहा	59
17.	कलाओं में गति	–बाल कीर्ति	61
18.	गति एक प्रक्रिया, एक आधार है, निरंतरता का जो प्रतीक है जीवन का	–काजल शर्मा	64
19.	"भारतीय संगीत परंपरा में गति का महत्त्व"	–शिखा द्विवेदी	65
20.	गति : एक कलात्मक भाव	–रजनी राव, डॉ. नंदकिशोर कपोते	70
21.	''कथक नृत्य में हस्तगति भेद–एक अध्ययन''	–उपासना दीक्षित	76
22.	'गति' का गुरूत्व और सौंदर्य अवदान	–डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'	79
23.	'गति' कत्थक नृत्य के विशेष संदर्भ में	–डॉ. रुक्मणी जायसवाल	82
24.	गति ही जीवन का मूलाधार चक्र है	–चित्रा मोहन	84
25.	गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि!	–रमेश तैलंग	89
26.	गति	–डा. मीरा दीक्षित	93
27.	ठुमरी गायकी : गत्यात्मक संदर्भ	–डॉ. अरविन्द कुमार	94
28.	भारंगम, मूवमेंट्स इन ऐक्टिंग, लाइफ़ कैनवास एवं गति की अवधारणा	–डॉ. कुलिन कुमार जोशी	97

29.	Movement: एक अनंत यात्रा	–पुनीत मित्तल	101
30.	जो रुका है वो जड़ है !	–प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी	102
31.	ओडिशी नृत्य में ''गति'' (Gati) का प्रयोग	–कुंजलता मिश्रा	104
32.	परम सूक्ष्म स्तर पर यह गति परमाणु में विद्यमान है	–ललित सिंह पोखरिया	106
33.	कथा गायन वाचन शैली में आंगिक गतियों का कला सौन्दर्य	–डॉ. ममता धवन	109
34.	कला में गति और गति में कला–भारतीय कला में गति की अवधारणा	–कुशाग्र जैन	111
35.	शंभू भट्टाचार्य और उनका प्रसिद्ध नृत्य ''रनर''	–ज़ाहिद खान	116
36.	मानव और गतिः कला के माध्यम से चेतना का प्रकटीकरण	–कृतिका रघुवंशी	118
37.	गति और मुखौटे का नृत्य छऊ	–डॉ. ललित कुमार सिंह	120
38.	The concept of Gati in our arts with special reference to dance..... Kathaka	–Prof. Dr. Ranjana Srivastava	123
39.	Kathak Bol Padhanta as Gati Speed of thought, vibrations and movements	–Renu Sharma	125
40.	Gate in Indian Classical Performing Arts : A Shastric and Performative Perspective	–Pratyush Dadhich	128
41.	"Movement" - GATI in Dancer's Perspective	–Dr. Keya Chanda	132
42.	Gati : Dance movements in medieval manuscripts	–Renu Sharma	133
43.	Contribution of Dr. Puru Dadheech in respect of Gati in Kathak	–Riddhi Mishra, IRS	143
44.	प्रतिक्रिया : **1. सुशील कुमार सिंह 2. राजेंद्र शर्मा 3. बृजमोहन जोशी 4. डॉ. बीरेन्द्र कुमार 'चन्द्रसखी' 5. डॉ. विनय दास 6. जाहिद खान**		**145**

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
ब्रज मोहन जोशी
238/2, नया बाजार
तल्लीताल, नैनीताल–263002
मो. : 9410749433

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
हरीपाल
राहुल
सोनू

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 200/–

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : www.kalavasudha.com ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा मुद्रक : प्रिन्टआर्ट ऑफसेट, 33 कैण्ट रोड, लखनऊ RNI - Regd. PRESS/2024/624/00002209
मो. : 9839011924 **से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।**

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना—सुनना

सुधी, सहृदय, स्नेही पाठक गण!

सादर अभिवादन

आप सभी ने पिछले अंक में "रामलीला प्रसंग" के विभिन्न रूपों का "कलावसुधा" के प्रांगण में रस ं पान किया। तद्‌विषयक कुछ अनमोल प्रतिक्रियायें भी पाठकों द्वारा प्राप्त हो रही हैं। "कला वसुधा" अपने कला कर्म के विविध प्रसंगों के रूप में चौबिस साल पूर्ण कर चुकी है। इस अन्तराल में हमारे अनमोल लेखकों की लेखनी की "गति" कभी रुकी नहीं है। जब भी कला वसुधा परिवार की ओर से किसी विशेष अंक में निहित विशिष्ट विषयों पर विद्वान लेखकों से लेख मांगे जाते है तो उन्होंने देर सबेर हर स्थिति में हमें अपना लेख देकर सहयोग किया है और वो भी निःशुल्क। कला वसुधा परिवार का प्रेम ही उनका पत्रपुष्प पूजा है तथा पाठकों का स्नेहिल व्यवहार, पत्रिका को पढ़ने की उत्कंठा, तथा लगन हमें निरंतर नये—नये विषयों पर अंक प्रस्तुत करने को प्रेरित करती रहती है। जहाँ—जहाँ हमारे मन, विचार और बौद्धिक सोच की "गति" पहुँचती है और अंक का स्वरूप बनना आरम्भ हो जाता है। जिसमें सहयोग हमारे सहृदय विद्वान लेखक हमेशा देते है और स्नेही पाठकों की प्रेरणा हमारी कलावसुधा के कलाकर्मी को "गति" देती जाती है। जी हाँ। यह अंक "गति" (Movement/ Motion) पर आधारित है।

हमने कभी सोचा था "इस विषय का संगीत के संदर्भ में विश्लेषण" पर शोध कार्य करवाने के लिये किन्तु शोध समिति में यह विषय छात्रों के लिये अधिक कठिन प्रतीत हुआ तो मैंने इसे समय पर छोड़ दिया और आज "कलावसुधा" के इस अंक में यह विषय अपने समग्र आयामों के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे अनेकों विद्वान जुड़कर अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

प्रत्येक कर्म विभिन्न क्रियाओं द्वारा सम्पादित होता है जिसमें निरंतर एक चैतन्य शक्ति का विद्युत प्रवाह गमन करता है। उस प्रवाह का गमनागमन ही गति कहलाता है। गति शब्द गम् धातु में क्तिन् प्रत्यय के योग से बना है। जिसका अर्थ है—गमन या परिवर्तन। गति अर्थात एक निरंतर प्रक्रिया का धीरे या तेज होना। यह एक क्रिया विशेषण भी है। प्रकृति, जो समस्त ब्रह्माण्ड के प्राणियों में चैतन्य स्वरूपा है हृदय की धक्—धक्। यदि यह धक्—धक् की निरंतरता बंद तो चेतना नही। गति और सम्पूर्ण सृष्टि का सम्बन्ध ही प्रकृति है। निरंतर चलते रहना ही गति है और रुक जाना जड़ता है या मृत्यु है। गति को अंग्रेजी में मूवमेंट (Movement) या मोशन (Motion) कहते है। यह कयी अर्थों में प्रयुक्त होता है जैसे—

(1) कुछ करने की क्रिया के रूप में

(2) स्थिति में परिवर्तन के रूप में,

(3) आंदोलन या कम्पन के रूप में,

(4) चलन के रूप में

(5) संचरण के रूप में

(6) चाल के रूप में

(7) गतिविधि के रूप में

(8) लय के रूप में

(9) झुकाव के रूप में

(10) हृदय के स्पंदन के रूप में

(11) दशा के रूप में

(12) किसी क्रिया के प्रतिफलित स्वरूप के रूप में

(13) किसी विशेष स्थान पर पहुँच के रूप में

(14) कला कर्म के रूप में

(15) राग में स्वर विशेष के लगाव के रूप में

(16) संगीत के तृतीय घटक पद अर्थात भाषागत भाव के रूप में.

(17) नृत्य में तो अंग संचालन, चारी, करण आदि अनेकों रूपों में

(18) भौतिक, आध्यात्मिक, भावात्मक, मानसिक एवं सामाजिक चिंतन तथा उसकी क्रिया के रूप में

इस प्रकार गति के सम्बन्ध में यह कह सकते हैं "हरि अनंत, हरि कथा अनन्ता" यह स्रष्टि की प्रत्येक क्रिया के विकास, प्रवाह, परिर्वतन आदि के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अनुस्यूत दिखाई देती है।

प्रकृति में पूरे ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत ग्रह, नक्षत्र, तारागणों की गमन प्रक्रिया जो नियमित गति में घूमते है, पृथ्वी का निश्चित गति में घूम कर सूर्य की परिक्रमा लगाना, ऋतुओं का नियमित, गमनागमन, शरीर में श्वास का आवागमन, तेज या धीमें चलना आदि गति को परोक्ष रूप से प्रदर्शित करता है। यूँ देखा जाय तो गति का सामान्य अर्थ है किसी वस्तु या व्यक्ति का एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गमन करना, बढ़ना, सरकना या परिवर्तित होना यह सभी भौतिक भी हो सकता है या आध्यात्मिक, या मानसिक या भावात्मक अथवा सामाजिक आदि भी। व्यक्ति या वस्तु के स्वभाव और संग से यह निर्धारित होता है। किन्तु यह क्रिया के लिये भौतिक या चेतना की शक्ति से प्रेरित होना आवश्यक है। बिजली है तो पंखे में गति है। गति अपने आप उत्पन्न नहीं होती बल्कि किसी न किसी बल से उत्प्रेरित होती है। जैसे ब्रह्माण्ड में सभी जीव—जन्तु, पेड़—पौधे चेतना से गतिशील हैं। उन सब में चेतना के विविध स्तर उन्हे विकास के लिये कारण बनते हैं। गति जीवन का प्रतीक है, नदियों का प्रवाह है तो वायु का बहना भी। क्योंकि ये सभी प्रकृति के अंग और चैतन्य हैं।

यद्यपि प्रकृति के सभी परिवर्तन विकास की ओर नहीं ले जाते हैं क्योंकि कभी—कभी गति का प्रवाह पीछे की ओर भी होता है जैसे मनुष्य के बचपन से जवानी की ओर परिवर्तन विकास है परन्तु जवानी से बुढ़ापे की ओर गति का प्रवाह पीछे की ओर सहज ही हो जाता है।

कलाओं में कुछ विशेष प्रतीकों से भी गति के प्रवाह को प्रकाशित करते है और कुछ मुद्रायें गति के प्रवाह को इंगित करती हैं।

विद्वानों ने गति के सामान्यतः आठ लक्षण कहे हैं यथा–

(1) समान गति

(2) सरल रेखीय गति

(3) वृत्तीय गति

(4) घूर्मन गति

(5) दोलन तथा कम्पन गति

(6) असमान गति

(7) प्रक्षेप्य गति

(8) एक जैसी वृत्तीय गति

श्रीमद्भगवतगीता के अनुसार "जीव के मरणोपरान्त आत्मा किसी लोक या स्थिति" को प्राप्त होती है यह उसकी गति कहलाती है–यह तीन प्रकार की है (1) देव गति (2) मानव गति (3) मोक्ष गति। इसी प्रकार विभिन्न दर्शनों में गति पर अलग–अलग भाष्य है। सांख्य में रजोगुण को गति का मूल माना गया है जो प्रेरणा, क्रिया, परिवर्तन तथा प्रवाह का कारक है।

प्रकृति रजोगुणी होकर सृष्टि का संचालन करती है। जबकि पुरुष शुद्ध चेतना होकर भी स्थिर है। वह प्रकृति के सम्पर्क में आने पर ही उसकी चेतना गतिवान होती हैं। इसी प्रकार आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध के मध्य निरंतर निर्झर की तरह चैतन्य प्रवाह विभिन्न दर्शनों में गति कहा गया है। सभी का इस सम्बन्ध को परिभाषित करने का तरीका अलग हो सकता है किन्तु तत्व एक ही है कि गति का प्रकृति से गहरा सम्बन्ध है।

कुछ विद्वानों ने गति के दो भेद बताये हैं। (1) चलित (2) स्थिर। वही नृत्य के संदर्भ में गति के 10 भेद बतायें हैं यथा–(1) हंसी (2) मयूरी (3) मृगी (4) गजलील (5) तुरंगिनी (6) सिंही (7) भुजंगी (8) माण्डुकी (9) वीरा (10) मानवी।

इसी प्रकार संगीत रत्नाकर में शारंगदेव ने प्रबन्ध के संदर्भ में भी तुरंगलीला, गजलीला, चक्रवाल, क्रोंचपद, कलहंस, रागकदम्ब, पंचतालेश्वर, पंचभंगि, त्रिभंगि, कंदुक, त्रिपथ आदि अनेकों प्रकारों के प्रबन्धों का उल्लेख किया है जो कि लक्षणा से गति के विभिन्न प्रवाहों को प्रकट करते है। जब गति के अनेकों अर्थ जैसे चाल, वेग, प्रवाह, रफ्तार, दशा, स्थिति, स्वरूप, पहुँच आदि है तो लक्षणा से सभी प्रबन्धों का सम्बन्ध किसी न किसी प्रकार से गति से तो है ही। बिना गति के संगीत की तीनों विधाओं (गायन, वादक, नृत्य) की परिकल्पना ही नहीं की जा सकती। सकारात्मक, विकासोन्मुखी एवं नवनवोन्मेशी प्रतिभा से उत्पन्न संगीत की प्रत्येक विधा में गति किसी न किसी तरह से अनुस्यूत है।

नाट्य शास्त्र में नृत्य को करण नामक 108 मूलभूत इकाइयों में विभाजित किया है। ये करण हाँथ और पैर के विशिष्ट संयोजनों और शारीरिक, भंगिमाओं को परिलक्षित करते है। प्रत्येक करण नृत्य के एक विशिष्ट तत्व को संकेतित करता है। इन करणों को अंगहार नामक जटिल रूपों में भी संयोजित किया गया है जो कि 32 प्रकार के होते है। दृष्टि के 36 भेद, भृकुटी संचालन के आठ प्रकार, नासा कर्म के छै भेद, गण्ड कर्म के छै भेद, अधरों के छै कर्म, चिबुक कर्म के छै भेद, ग्रीवा कर्म के नौ प्रकार, चौबिस प्रकार के असंयुक्त हस्त, तेरह प्रकार के संयुक्त हस्त, सत्ताइस प्रकार के नृत्तहस्त, हाँथों के चार करण, चारी प्रकरण में भूमिचारी के सोलह भेद, आकाशचारी के सोलह भेद आदि नृत्य के संदर्भ में विषद वर्णन है जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से गति का प्रयोग अवश्य है। हमारे विद्वान लेखकों ने नृत्य का गति से सम्बन्ध पर ताल का गति से सम्बन्ध पर, विषद वर्णन अपने लेखों में किया है।

ताल के संदर्भ में लय तथा लय के प्रयोग से सीधा सम्बन्ध रखने वाली यति पर भी विचार आवश्यक है। संगीत रत्नाकर के अनुसार "क्रियान्तरविश्रान्तिर्लयः" अर्थात् ताल में क्रियाओं के मध्य विश्रान्तिकाल से लय उपजती है। ताल शब्द तल् धातु से बनता है। काव्य में छन्द और संगीत में ताल समय को मापने के पैमाने है। वहीं लय का अर्थ है "लीन" होना। संगीत में दो क्रियाओं के मध्य का विश्रान्ति काल लय कहलाता है। यह मुख्यतः विलम्बित, मध्य एवं द्रुत ये तीन प्रकार की होती है। इसके अतिरिक्त ताल की दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़ एवं बियाड़ आदि लयों के प्रकार भी है। ताल हो या लय हो इन सभी में गमन क्रिया अनुस्यूत है। अतः गति का प्रवाह न हो तो ये सभी की संरचना और प्रदर्शन दोनों ही असम्भव हैं। यहीं कला की विभिन्न विधाओं को घरानों के माध्यम से गुरू ने अपनी अगली पीढ़ी तक न पहुँचाया तो वहाँ भी कला के प्रवाह की गति रूक जायेगी। उसे निरंतर अग्रसर करने के लिये नवनवोन्मेशमयी प्रतिभाओं से कला के प्रवाह को अग्रगामी बनाना कलाधर्मियों का कर्तव्य है और यही उनकी पूजा भी है। अतः प्रत्येक क्रिया का मूल गुणगति है जो पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तनों के प्रभाव के साथ गतिमान होता है।

ऐसे तो प्रत्यक्ष रूप में संगीत में गति लय के रूप में देखी जाती है। ताल को मात्राओं के चलन के रूप में गति का ही रूप कहा जाता है। इसे पाश्चात्य संगीत में "टैम्पो" (Tempo) अर्थात् "लय" और "रिदम" (Rhythem) ताल कहते हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने लय को कयी रूपों में स्पष्ट किया है। जिस गति अथवा लय में संगीत की रचना गायी, बजायी अथवा नाची जाती है उस गति को "टैम्पो" (Tempo) कहते हैं। यह कयी प्रकार का है। जैसे–

(1) **Andante-** का अर्थ है कि न बहुत तेज और न बहुत धीमी लय अर्थात् मध्य लय।

(2) **Allegro-** का अर्थ है कि "प्रसन्नता से चलना" अर्थात् तनिक तेज लय बजाना।

(3) **Largo-** का अर्थ है "रचना को बहुत धीमी लय में यानी अतिविलम्बित लय में बजाना।

(4) **Larghetto-** का अर्थ है धीमी गति से ही है। यह विलम्बित लय जैसी है।

(5) **Accelarando- (Accel)** का अर्थ है गति को क्रम से द्रुत करते रहना।

(6) **Presto-**का अर्थ है द्रुत लय में बजाना।

(7) **Prestissimo-** का अर्थ है कि जितनी शीघ्रता से बजा सके बजायें। जब क्रम से नाद और (लय) गति दोनों उसी क्रम में बढ़ाना होगा।

(8) **Incalzando-** का अर्थ है शब्द और लय दोनों का क्रम धीमा और विलम्बित करें।

(9) **Calando-** का अर्थ है दोनों का प्रयोग (नाद और लय) क्रमशः तेज किया जाता है।

"रिदम" (Rhythem)– पाश्चात्य संगीत में नाद के काल का उपयोग रिदम के द्वारा किया जाता है। यह तीन प्रकार का है। (1) मैट्रिकल रिदम (Metrical Rhythem) (2) मैजर्ड रिदम (Measured Rhythem) तथा (3) फ्री रिदम (Free Rhythem) यह ताल मात्राओं के विभिन्न प्रकार के मीटर को बताता है। यही ताली विभिन्न गतियों में गाई बजाई जाती हैं।

भारतीय तालों में लयों के प्रयोग की विविधता को "यति" के अन्तर्गत वर्णित किया गया जिसका सीधा सम्बन्ध गति से है।

यति–लय को सुन्दर रूप देने के लिये जो सिद्धान्त, नियम या मार्ग हैं उन्हें यति कहते हैं यह मूलतः पाँच प्रकार की है। यथा–

(1) समायति–इसमें आदि मध्य और अन्त सब में एक प्रकार की लय की गति रहती है जैसे–0 0 0 0 या । । । । ।

(2) स्रोतोगता– (नदी का प्रवाह स्वरूप) जैसे नदी के प्रवाह में नदी आरम्भ में पतली होती है फिर क्रम से चौड़ी होती जाती है तो ऐसी रचना को स्रोतोगता कहते हैं। जैसे–नी, धनी, पधनी, मपधनी, गपधनी, गमपधनी या धाधा, दिंदिं, नानानाना, तिंतिंतिंतिं, तकतक, तकतिरंकिट, तकधिरकिटतक या रेखाओं के आधार पर यह इस प्रकार देख सकते हैः–

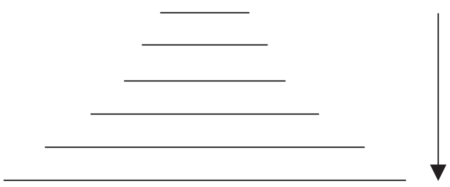

(3) मृदंयागति–इसमें मृंदग की भाँति बीच में सबसे द्रुत लय रहती है और प्रारम्भ तथा अन्त में विलम्बित जैसे–

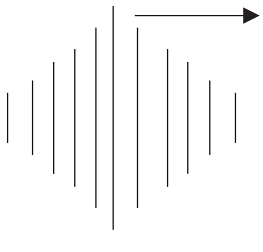

(4) गो पुच्छा यति–यह गाय की पूँछ की भाँति प्रारम्भ में चौड़ी रहती है और क्रम से पतली होती जाती है। जैसे–

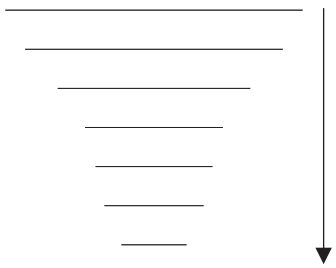

(5) पिपीलिका यति–इसकी चाल चींटी की भाँति होती है। अर्थात् आदि अंत में समान रहती है परन्तु मध्य बदल जाती है। इसके तीन प्रकार हैं जो इस प्रकार है–जैसे–

क्रम	आदि	मध्य	अन्त
1.	विलम्बित	द्रुत	विलम्बित
2.	मध्य	द्रुत	मध्य
3.	विलम्बित	मध्य	विलम्बित

इनके अतिरिक्त दो यति और प्राप्त होती है यथा–

(6) डमरू–इसमें प्रारम्भ और अंत द्रुत लय रखते है परन्तु मध्य तक विलम्बित लय हो जाती है। यथा–

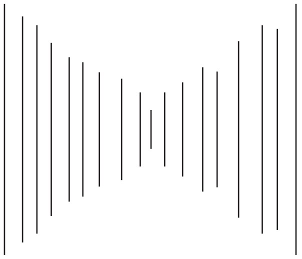

(7) विषम यति–इसमें ताल की लय किसी भी नियम के अनुसार नहीं चलती जैसे–

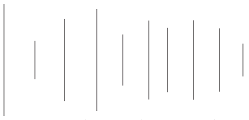

लय की गति को सर्वाधिक सौन्दर्यमय या तो यति से करते है या लयकारी से करते है। ताल में विभिन्न बोलों को उसी लय में प्रयोग करते है इस सभी से एक सुन्दर सी गति का प्रवाह बनता है।

संगीत के गायन पक्ष में भी स्वरों के लगाव में भी गति का स्थान है। अलंकारों का अभ्यास, पलटों का अभ्यास और तानों आदि के नियमित अभ्यास एक विशेष लय में कराये जाते है। जिनका प्रयोग गायक अपने राग गायन में करता हैं। हर राग में सभी स्वर नहीं लगते। किसी में कम किसी में ज्यादा या कहीं कही जरा सा स्पर्श भर होता है या कभी–कभी बिलकुल नहीं लगते तो इसका अर्थ है स्वर विषेश का राग में प्रयोग होना उसकी पहुँच को दर्शाता है। कहीं किसी राग में किसी स्वर विशेष की पहुँच होती है किसी में नहीं या किसी में एक सीमा तक। यह पहुँच क्रिया भी गति को ही इंगित करती है। जैसे कहा जाता है कि "इस राग में इस स्वर की अधिक गति नहीं है। उसे छूकर ही वापस आना होगा। ऐसे गायन में अनेकों उदाहरण हैं। तो गति का प्रयोग संगीत की तीनों विधाओं में प्रयुक्त है। राग गायन में बंदिशों में ताल और लय के साथ गति का समन्वय है ही। ये सभी एक दूसरे के पूरक और जुड़े हुए हैं। इन सबको मिलाकर ही सुन्दर स्वरूप बनता है। अकेले में कला का कोई एक अंग ही उभरता है। पर आनन्द, और रस तो कला की समग्रता में है। जहाँ पर स्वर ताल और पद तीनों की गति का समन्वय नवनवोन्मेशी और सानुपातिक हो। ऐसा न होने पर जो स्थिति होगी तो उसे दुर्गति ही कहा जायेगा। कलाकार जब अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो उनकी जो खूब प्रसंशा होती है यह उनकी सद्गति है और कार्यक्रम में जरा भी गड़गड़ हुई तो बस खैर नहीं, श्रोता दर्शक कलाकार की दुर्गति बनाने में बाज नहीं आते हैं। यहाँ गति का प्रयोग व्यक्ति विशेष की दशा के लिये प्रयुक्त किया गया है। इसीलिये आरम्भ में ही गति के अनेकों अर्थ बताने के प्रयास किये गये हैं। यहाँ हमने गति के विस्तृत पक्ष के कुछ ही प्रयोग प्रस्तुत किये हैं बाकी हमारे पण्डित लेखकगणों ने कुछ छोड़ा नहीं है ऐसी आशा है। शंकराचार्य का एक स्तोत्र "गतिस्वं गतिस्वं त्वमेका भवानी" से अपनी लेखनी को गति के देवत्व पर विश्राम देती हूँ। अर्थात् हे ! आदि शक्ति अर्थात् प्रकृति (चैतन्य स्वरूपा देवी) हम सब की बस तुम तक गति बनी रहे। इसी आशीष की कामना के साथ कला वसुधा परिवार आप सभी की शुभ कामनाओं की अपेक्षा करती है ताकि इसका कलाकर्म हमेशा इसी तरह सदा सर्वदा निरंतर अपनी गति के प्रवाह को बनाये रखें। धन्यवाद–

उषा बनर्जी

काल, कला और गति

❍ डॉ. राजेश कुमार व्यास

बरसों पहले यामिनी कृष्णामूर्ति का नृत्य देखा था। वह विदुषी नृत्यांगना थी। अक्सर संवाद में कहती थी, मैंने वितस्ता नदी को नृत्य में बांधना चाहा। मुझे लगा नदी और नृत्य में समानता होती है। दोनों गति में जीवंत होते हैं।

यह सही है, गति है तभी जीवंतता है। जो सभ्यताएं चलती रही, उनका विकास हुआ। जो कहीं ठहर गई, उनका विकास भी रूक गया। पानी एक ही जगह पर ठहरा रहता है, सड़ांध मारने लगता है। बहता है तभी उसकी सार्थकता है। एतरेय ब्राह्मण का बहुश्रुत मंत्र है चरैवेति...चरैवेति।

माने चले चलो। चलते रहें। बुद्ध ने भी इसीलिए भिक्षुओं से कहा, 'चरथ भिक्खवे चरत' अर्थात, भिक्षुओं चलो। चलते रहो। जो चलता है, वही मधु प्राप्त करता है। राजस्थानी में तो एक कहावत ही है, 'फिरै जिका ही चरै।' माने जो भ्रमण करता है, वही खाने के लिए कुछ प्राप्त कर सकता है। पोषण उसे ही मिलता है।

चलना गति है। कहीं ठहरना जड़त्व।

नदियों को बहते देखता हूं तो ठहरकर उनकी गति में ही मन रमने लगता है। मुझे लगता है, कभी नहीं थकने का गति का मंत्र गाती है, नदियां। नदी का अर्थ ही है, प्रवाह। अविरल बह नदियां समुद्र में मिल जाती है। पर रास्ते के गड्ढों को भरती जाती वह अभाव में भी जैसे भाव भरती जाती है।

कहीं पढ़ा हुआ याद आया। सभी नदियां सागर पत्नी हैं। समुद्र का एक नाम सरित्पति है। इसीलिए तो कहा है, 'सागरे सर्व तीर्थानि'। यानी सभी तीर्थ सागर में हैं। सागर को तीर्थ रूप में पवित्र करने का कार्य नदी करती है।

नदी कहीं रूकती नहीं। बहती चली जाती है। उसके बहने की गति में ही रमते सुनी–सुनाई कहानी याद आ रही है। किसी ने कलकल बहती नदी से पूछा, तुम ठहरती नहीं। इतनी गति में क्यों भागी जा रही हो। खारे समुद्र से मिलने क्योंकर आतुर हो?जरा बतातो तो सही। तुम्हारा जल मिठा है, समुद्र का खारा क्यों? नदी मुस्कराई!

कुछ नहीं कहा। ऐसे ही अपनी गति में बहते, न रूकते हुए उसने कहा मुझे फुर्सत नहीं है कुछ बताने की। समुद्र से ही पूछो कि वह खारा क्यों है? वही जवाब देंगे।

बहता जल मिठा होता है, ठहरा हुआ खारा। और फिर समुद्र भी तो नदी का जल मेघों को सौंप फिर से हमें मिठापन लौटा देता है। अरसा पहले कविता लिखी थी–

लौट आता है,
और उर्वर हो जल
जहां से जाता है।
पहाड़ों से बह नदी बन
सागर में घुल
खारा हो जाता है जल
मीठा करने सौंप देता है
समुद्र उस जल को
बादल को
बादल धरती को
धरती भी कहां रखती है अपने पास!
अन्न उगा कर, पेड़ पौधे सींच
लौटा देती है, जल
जिसे जो मिला
उसी ने दिया
इसी से बचा जीवन।

कहीं कुछ थमता है तो जड़त्व आता है। नदी, समुद्र में मिलती है। समुद्र मेघों को जल देता है। मेघ धरती हो। यही प्रकृति है। जीवन गति है। इसीलिए कहता हूं, थमना मृत्यु है। जब तक शरीर में सांस चलती है, जीवन बचा है। वह रूक गई, मृत्यु तय है। गति के साथ मति होगी तभी कुछ किया फलेगा। महात्मा ज्योतिबा फुले ने कहा है,

'विद्या बिना मति गयी,
मति बिना नीति गयी,
नीति बिना गति गयी,
गति बिना वित्त गया।'

बिना शिक्षा के बुद्धि चली जाती है। बगैर बुद्धि के नीति नहीं रहती। नीति बिना गति नहीं रहती। और बिना गति के धन चला जाता है। धन संचय कर लिया, उसे कहीं पुण्य कार्य में नहीं लगाया तो वह चला जाएगा। रहीम दासजी ने तो बहुत पहले ही कह दिया था–

'कमला थिर न रहीम कहि,
यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की वधू,
क्यों न चंचला होय।।'

लक्ष्मी कहीं स्थिर नहीं रहती। सभी यह जानते हैं। वह पुरातन यानी पुराण पुरुष भगवान विष्णु की पत्नी हैं। इसलिए चंचल तो होगी ही। लक्ष्मी का प्रयोग विवेक से करेंगे तभी वह फलेगी फूलेगी। धन थिर नहीं रहता। उसमें मति के साथ गति होगी तभी वह बढेगा।

यही बात विद्या के साथ भी लागू होती है। विद्या को अपने तक ही सीमित रखा। उसे आगे नहीं बढ़ाया, उसमें गति नहीं की तो एक रोज सब कुछ जो विद्या प्राप्त की है, जड़ हो जाएगी। बचपन में पढ़ा याद आ रहा है–

'सरस्वती के भंडार की,
बड़ी अपूर्व बात।
ज्यों खरचे त्यों त्यों बढ़े,
बिन खरचे घट जात।'

सरस्वती का भंडार सीखा हुआ ज्ञान है, विद्या है। इसकी यही अनोखी बात है कि जितना उसे खर्च करेंगे, उसमें गति रहेगी वह बढ़ता चला जाएगा। पर जैसे ही उसे अपने पास रख लिया। आगे नहीं बढ़ाया। किसी के साथ साझा नहीं किया वह घटता चला जाएगा। गति की यहां यही महिमा है। हमारे यहां कहा गया है–

गहना कर्मणो गतिः

कर्म की गति गूढ़ है। इसलिए विवेक जरूरी है। अन्यथा हम व्यर्थ भागदौड़ करेंगे, मिलेगा कुछ नहीं। कर्म ही मनुष्य को देवत्व की प्राप्ति कराता है। वही बहुतेरी बार नरक का भागीदार भी बनाता है। श्री कृष्ण ने इसीलिए अर्जुन को महाभारत में युद्ध के दौरान कर्मगति समझाई थी।